रस की अवधारणा

प्रा. मिथिलेश अवस्थी

- भारतीय जीवन में सर्वश्रेष्ठ तत्त्व कहा जाता है।
- पदार्थों का रस (फल-फूल आदि)।
- भोज्य रसों को षडरस (खट्टा, मीठा, लवण, कसैला, कडुवा, सादा) कहते हैं।
- आयुर्वेद में औषधि के रूप में कंद, मूल, पत्ती, फूल फल का रस।
- साहित्य में मानसिक आनंद को रस कहा जाता है। वह ब्रह्मानंद ही रस है जिसे प्राप्त कर आत्मा आनंद स्वरूप बन जाती है।
- 'रस्यते इति रसं' रस वह है जो आस्वादित किया जाए।
- 'रसते इति रसं' अर्थात रस वह है जो बहे। इस तरह रस में दो विशेषताएँ होती हैं- आस्वादत्व और द्रव्यत्व।

रस की वैज्ञानिक विवेचना करने वाले प्रथम **आचार्य भरत मुनि** हैं। इन्होंने रस सूत्र में कहा है-

'विभावानुभावसंचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'

रस सामग्रीः-

१) **स्थाई भावः-** मनुष्य के हृदय में सुप्तावस्था में अवस्थित जन्मजात प्राप्त भावों को स्थाई भाव कहते हैं। दूसरे शब्दों में जो मनोविकार सहृदय के अंतःकरण में वासनारूप में विद्यमान रहते हैं उन्हें स्थाई भाव कहते हैं।

२) **विभावः-** स्थाई भाव को जागृत करने वाले कारण रूप व्यक्ति, वस्तु या विकार को विभाव कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं- (आलंबन और उद्दीपन)

१. आलंबनः- जिन पात्रों का आलंबन कर स्थाई भाव रस रूप में अभिव्यक्त होते हैं उन्हें आलंबन कहते हैं। इनमें नायक-नायिका आदि आते हैं। आलंबन दो तरह के होते हैं-

(क) विषय- जिसके प्रति भाव जागें,

(ख) आश्रय- जिसमें भाव जागें ।

२. उद्दीपनः- आलंबन द्वारा उत्पन्न भाव को उद्दीप्त करने वाला भाव उद्दीपन कहलाता है। इसके भी दो भेद हैं :-

(क) आलंबन गत बाह्य चेष्टाएँ,

(ख) बाह्य वातावरण।

३) **अनुभावः-** मनोगत, भाव या स्थाईभाव को व्यक्त करने वाली आश्रय की बाह्य (शारीरिक) चेष्टाएँ। ये चार प्रकार की होती हैंः-

(क) आंगिक, (ख) वाचिक, (ग) आहार्य, (घ) सात्विक

सात्विक के अंतर्गत तन्मय अवस्थामें- स्तंभ, स्वेद, रोमांच, कंप, अश्रु आदि।

४) **संचारी या व्याभिचारी भावः-** अस्थिर मनोविकारों और चित्त वृत्तियों को संचारी भाव

कहते हैं। ये अस्थिर, अस्थाई तथा संरचरणशील रहते हैं। एक संचारी भाव एकाधिक रसों में पाया जाता है। इनकी संख्या ३३ मानी गई है। (सुगम काव्य शास्त्र- पृ.५७)

भरत मुनि के रस सूत्र की व्याख्या (निष्पत्ति का अर्थ)

१) **भट्ट लोल्लट का उत्पत्तिवादः-** अभिनव गुप्त की अभिनव भारती में उल्लेख है।

संयोग = कार्य-कारण, भाव-रूप संबंध

निष्पत्ति = उत्पत्ति

विभावादि का स्थाई भाव से संयोग होने से रस की उत्पत्ति होती है। अर्थात रति, क्रोध, आदि स्थाई भाव, नायक-नायिका आदि आलंबन विभावों द्वारा उत्पन्न होकर, उद्यान आदि उद्दीपन विभावों से उद्दीप्त होकर, कटाक्ष, रोमांच आदि अनुभावों द्वारा जानने योग्य बनकर, उत्कंठा आदि संचारी भावों से पुष्ट होकर, रामादि के अनुकार्यों से (जिनका नट-नटी अभिनय कर रहे हैं) रस के रूप में जन्म लेता है।

मत की समीक्षाः-

१. सूत्र में स्थाई भाव नहीं है, फिर उल्लेख शास्त्रीय दोष है।
२. सहृदय में रस की स्थिति न मानना दोष है।
३. अनुकार्य (रामादि) हमारी पहुँच से परे हैं, अत नट-नटी की सफलता का अनुमान कैसे लगाया जा सकता है ? अनुकार्य के अभाव में अनुकर्ता कैसे ?

२) **आचार्य शंकुक का अनुमितिवादः-** इसका भी उल्लेख अभिनव गुप्त की अभिनव भारती में है।

संयोग = अनुमेय-अनुमापक भाव

निष्पत्ति = अनुमिति

विभावादि साधनों तथा रस रूप साध्य में अनुमाप्य और अनुमापक (गम्य-गमक) भाव माना जाता है। अर्थात रस अनुमेय है एवं निष्पत्ति अनुमिति है। पर्वत में धुआँ को देख कर अग्नि की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है वैसे ही नट में रामादि के अनुभावादि से रस की अनुमिति होती है। विभावादि अनुमापक हैं।

मत की समीक्षाः-

१. नट और अनुकार्य में तादात्मय ठीक नहीं।
२. अनुमान अनुमान ही होता है।
३. अनुकार्य के अभाव में अनुकरण कैसे (वेशभूषा, मनोभाव आदि)

३) **भट्ट नायक का भुक्ति वाद (भोग):-**

संयोग = भोज्य-भोजक भाव

निष्पत्ति = भुक्ति (भोजकत्त्व)

भट्ट नायक ने काव्य के संबंध में अभिधा शक्ति के अलावा भावकत्व और भोजकत्व नामक दो शक्ति व्यापार माना है। सहृदय अभिधा शक्ति के द्वारा सर्वप्रथम वाच्यार्थ जानता है। इसके बाद भावकत्व

व्यापार के द्वारा सहृदय रामादि पात्रों की भावना जोड़ लेता है (रामादि विशिष्ट से साधारण बन जाते हैं) अब उसे जो आस्वाद होता है वह भोजकत्त्व कहलाता है।

मत की समीक्षाः–

१. नए शक्ति व्यापारों का शास्त्रीय आधार नहीं है।

२. साधारणीकरण के सिद्धांत को जन्म देने वाले।

४) आचार्य अभिनव गुप्त का अभिव्यक्तिवादः–

संयोग = व्यंग्य और व्यंजक भाव

निष्पत्ति = अभिव्यक्ति

ध्वनिवादी आचार्य अभिनव गुप्त रस को व्यंग्य तथा रस की निष्पत्ति सामाजिक में मानते हैं। वे रस की अभिव्यक्ति व्यंजना वृत्ति से बताते हैं, अभिधा, लक्षणा से नहीं मानते। उनका मानना है कि विभावादि व्यंजकों द्वारा स्थाई भाव ही साधारणीकृत रूप में व्यंग्य होकर रस में अभिव्यक्ति पाते हैं। जब तक विभावादि की स्थिति बनी रहती है तब तक रसाभिव्यक्ति भी बनी रहती है।

मत की समीक्षाः–

१. पूर्णतया मान्य सिद्धांत।

२. भट्ट नायक की भूमि पर अस्तित्त्व का निर्माण।

३. सामाजिक तथा विभावादि का साधारणीकरण।

–:रस के प्रकारः–

	रस का नाम		स्थाई भाव
१.	श्रंगार	–	रति
२.	करुण	–	शोक
३.	हास्य	–	हास
४.	रौद्र	–	क्रोध
५.	वीर	–	उत्साह
६.	भयानक	–	भय
७.	वीभत्स	–	जुगुप्सा
८.	अद्भुत	–	विस्मय
९.	शांत	–	निर्वेद
१०.	वात्सल्य	–	वत्सलता
११.	भक्ति	–	श्रद्धा
१२.	बौद्धिक	–	बुद्धि
१३.	व्यंग्य	–	व्यंग

विवेचनः– सुगम काव्य शास्त्र– पृ. ५३